शिष्यता के अनिवार्य तत्व

आत्मिक जीवन के लिए अनिवार्य तत्व
अगुवों की मार्गदर्शिका

छोटे समूहों की अगुवाई करना
अध्याय 3 : व्यस्कों को सिखाना

परिचय

छोटे समूहों की अगुवाई करना नामक यह अध्याय शिष्यता के अनिवार्य तत्व मॉड्यूल का एक भाग है। इन अध्यायों का उद्देश्य विकासशील अगुवों को कौशल व समझ द्वारा तैयाद करना है ताकि वे सफलता पूर्वक छोटे समूहों की अगुवाई कर सकें। छोटा समूह बाइबल अध्ययन या शिष्यता का समूह, या कोई दूसरे प्रकार का लधु समूह हो सकता है जिसे शिष्यता या सेवा के लिए इस्तेमाल किया जाता है। एक छोटे समूह के अगुवे के रूप में तैयार होने से दूसरों को सिखाने की योग्यता में आपको फायदा होगा और साथ ही साथ सभी लोगों को इस काम में बहुत मज़ा आएगा। यह मॉड्यूल वर्तमान काल में कलीसिया की अगुवाई में शामिल लोगों या छोटे समूह के सदस्यों के लिए तैयार किया गया है। कौन जाने कि एक छोटे समूह का सदस्य किसी दूसरे समूह की ज़िम्मेदारी का कार्य भार सम्भाले।

अपेक्षित श्रोतागण

इन अध्यायों के लिए अपेक्षित श्रोतागण वे मसीही लोग हैं जो मसीही विश्वास में परिपक्व हो रहे हैं और जो गम्भीरता के साथ परमेश्वर की सेवा करने की इच्छा रखते हैं। इस अध्याय से कलीसिया के उन अगुवों को भी लाभ होगा जो लोगों को ईश्वरीय सम्बन्धों व विवाह तथा परिवार के बुनियादी तत्वों की शिक्षा प्रदान करना चाहते हैं।

अध्ययन कुँजी का निमार्ण एक अगुवे के रूप में आपकी सहायता करने के लिए तैयार किया गया है। इन अध्यायों की रूपरेखा को www.dehindi.org पर प्राप्त "शिष्यता के अनिवार्य तत्व की अन्य सामग्री" के साथ उपयोग किया जा सकता है।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing

छोटे समूहों की अगुवाई करना

अध्याय 3: व्यस्कों को सिखाना

उददेष्य

इस अध्याय का उददेष्य व्यस्क विद्यार्थियों की अनोखी जरूरतों को ढूंढ़ना और यह पता लगाना है कि उन्हें छोटे समूहों या सेवकाई में किस प्रकार सिखाया जा सकता है।

अगुवों की टिप्पणी

जब कभी हम अपनी पढ़ाई के बारे में सोचते हैं तो हमें अपना बचपन याद आता है। हम डैस्क में और अधिकतर एक पंक्ति में बैठा करते थे, हमें एक निपुण षिक्षक पढ़ाया करते थे और हम सारे सवाल जवाबों को अपनी कॉपियों में लिखा करते थे। लेकिन जब किसी घरेलू कलीसिया या छोटे समूह में षिक्षा देने की बात आती है तो यह तस्वीर पूरी तरह बदल जाती है। जिस तरह से किसी बालक से ज्ञान, तर्क या आत्म संयम रखने की उम्मीद नहीं की जा सकती है उसी प्रकार किसी व्यस्क से बच्चे की तरह षिक्षा प्राप्त करने की उम्मीद रखना अनहोना है। यह बात किसी को याद दिलाने की जरूरत नहीं है कि व्यस्कों के साथ बच्चों के समान व्यवहार नहीं करना चाहिए। यह अध्याय आपके प्रतिभागियों को पुनःविचार करने के लिए विवष करेगा कि वे किस तरह अपने समूह या कक्षा में षिक्षा प्रदान करते हैं। इस अध्याय को सिखाते समय अपने सभी कामों में एक आदर्ष बने ताकि आपके प्रतिभागी आपके जीवन को देखकर षिक्षा प्राप्त कर सकें। आप उनसे अपने समूह के साथ अपने अच्छे व बुरे दोनों ही प्रकार के अनुभवों को बांटने के लिए कह सकते हैं।

परिचय

समूह से पूछने के लिए निम्नलिखित प्रश्नों में से दो या तीन प्रश्नों का चुनाव करें ।

- क्या आपने कभी किसी बच्चे को कुछ सिखाया है? वह क्या था, और आपने उसे सिखाने के लिए क्या किया?(आपके समूह में कम से कम एक अभिभावक जरूर होगा, उनके द्वारा अपने बच्चों को सिखाई गयी किसी बात को लें– चलना, उनका नाम लिखना सिखाना, घर के काम इत्यादि,)
- आपके लिए दूसरों से आदर पाना क्या मायने रखता है? आपको कब अनादर महसूस होता है? आप दूसरों का आदर किस प्रकार से करते हैं?
- एक कहावत है,'आप किसी बूढ़े कुत्ते को नयी चाल नहीं सिखा सकते'। इसका अर्थ है कि किसी भी व्यस्क को नयी बातें सिखाना सम्भव नहीं है। क्या आप इस बात से सहमत हैं? व्यस्कों के लिए कौन सी चीज़ें बच्चों की तुलना में सीखना आसान होता है? कौन सी बातें बच्चों के लिए सीखना आसान होता है?
- आपने हाल ही में कौन सी ऐसी बात सीखी जिसे सीखना आपके लिए काफी कठिन था? हो सकता है कि वह आपके कार्यालय के लिए किसी नये उपकरण का इस्तेमाल करना सीखना हो। कौन सी बात आपको किसी नयी चीज़ को सीखने के लिए प्रेरित करती है?
- आप व्यस्कों को सिखाने की अनोखी जरूरत के बारे में पहले से क्या जानते हैं?

अध्ययन

समूह को निम्नलिखित बिन्दुओं की शिक्षा दें.

सिखाएं:

- **स्कूल का समय खत्म:** जिस प्रकार से हम प्रषिक्षण प्राप्त करने, नौकरी करने, घर गृहस्थी करने, समाज में अपना स्थान लेने के लिए अपने स्कूल के माहौल को पीछे छोड़ देते हैं। बहुत से लोगों के लिए तो यह लम्बी सांस लेने जैसा है। लेकिन कुछ लोग आगे भी अध्ययन जारी रखते हुए अपने आप प्रषिक्षक या षिक्षक बन जाते हैं। लेकिन हम में से बहुत से लोगो के लिए स्कूल से बचपन या जवानी तक ही सम्बन्ध बना रहता है।

- **पुनः सीखना:** परमेष्वर का वचन और मसीही जीवन दोनों की षिष्यता पर केन्द्रित हैं। परमेष्वर के ज्ञान में बढ़ने के लिए हम निम्नलिखित तरीकों से पुनः षिक्षा प्राप्त करने के माहौल में प्रवेष करते हैं:

    - कलीसिया में हर सप्ताह संदेष सुनने के द्वारा
    - टेलीविजन या रेडियो के कार्यक्रम को सुनने के माध्यम से
    - षिष्यता की कक्षा में दाखिला लेकर
    - छोटे समूह में बाइबल अध्ययन का एक भाग होकर
    - सेवकाई के लिए प्रषिक्षण के रूप में (सुसमाचार प्रचार, अराधना का दल, षिक्षा इत्यादि.....)

- **चुनौतियां :** व्यस्कों को षिक्षा प्रदान करने में सबसे बड़ी चुनौति यह सामने आती है कि हम उन तरीकों, माहौल व प्रक्रिया का इस्तेमाल नहीं कर सकते जिनका इस्तेमाल स्कूल में किया जाता था। व्यस्क अलग तरीके से सीखते हैं और बच्चों की तुलना में उनके प्रेरणा स्रोत भी अलग होते हैं। गम्भीरता के साथ सीखने वाले छोटे समूह का निर्माण करने के लिए,हमें व्यस्क विद्यार्थियों की जरूरतों को ध्यान में रखना जरूरी है।

- **व्यस्कों को निर्देष देना बच्चों को निर्देष देने से किस प्रकार अलग होता है:** बचपन से प्रौढ बनते समय केवल हमारा षरीर ही नहीं बढ़ता है। हमारा दिमाग अर्थात हमारे सोचने का ढंग भी बदलने लगता है। यहां तक कि पौलुस भी 1 कुरिन्थियों 13:11 में इन दोनों अवस्थाओं के बारे में टिप्पणी करता है '' जब मैं बालक था, तो मैं बालकों के समान बोलता था, बालकों का सा मन था, बालकों की सी समझ थी, परन्तु जब सियाना हो गया तो बालकों की बाते छोड़ दीं। '' अतः हमें भी व्यस्कों को षिक्षा प्रदान करते समय बच्चों के सिखाने के तरीकों से तौबा करनी चाहिए। छोटे विद्यार्थियों और व्यस्कों में कुछ मुख्य अन्तर होते हैं।

    - **सभी व्यस्कों की समझ का स्तर एक सा नहीं होता:** स्कूल के भीतर, बच्चों को उनकी उम्र या स्तर के आधार पर विभाजित कर दिया जाता है। अध्यापक को अन्दाज़ा रहता है कि उसकी कक्षा में आये बच्चों के सीखने क्या क्षमता है और उन्होने अपनी पिछली कक्षा में क्या सीखा होगा। जब व्यस्कों की कक्षा में आने वाले लोगों को:

        - वर्षों का अनुभव होता है।
        - उस विषय के बारे में ज्ञान होता है, और कई बार तो उन्हें आप से भी ज्यादा ज्ञान होता है।
        - पूर्ण रूप से विकसित ताकत व कमजोरियां होती हैं।
        - उनके पास चीज़ों को सीखने का मुख्य कारण होता है।
        -

    प्रभावषाली ढंग से सीखने के लिए, हमें सारे विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि(जैसा ऊपर बताया गया है) के बारे में थोड़ा बहुत ज्ञान होना बहुत ज़रूरी होता है। हम अपने अध्याय की षिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए उनके अनुभवों को आधार बना सकते हैं। विद्यार्थियों के पास बहुत बढ़ा संग्रह होता है और वे एक दूसरे को बल्कि आप को भी सिखा सकते हैं।

- **उनके पास खोने के लिए कुछ वास्तविक चीजें होती हैं:** व्यस्कों के लिए यह बात स्वीकार करना ही बहुत बड़ी बात होती है कि उन्हें जीवन के इस पढ़ाव पर कुछ सीखने की जरूरत है। किसी कक्षा या छोटे समूह में आकर दूसरे से कहना कि ' मुझे यह नहीं आता'। यह बात किसी भी व्यस्क के लिए कठिन साबित हो सकती है। षर्मिन्दगी महसूस करना एक गम्भीर मामला है। बच्चों को तो पता होता है कि वे सारी बातें नहीं जानते और न ही उनसे ऐसी अपेक्षा ही की जाती है। कई व्यस्कों के लिए सीखना एक भारी काम हो सकता है। व्यस्कों के लिए एक सुरक्षित वातावरण बनाने के लिए,एक अध्यापक को चाहिए कि:

- हर एक प्रतिभागी की प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए काम करना चाहिए।
- ज्ञान के क्षेत्र में अपने फासले को पहिचाने और नम्र बनें।
- विचारों में विविधताओं के प्रति आदर प्रगट करें।
- प्रतिभागियों को कभी भी मजाक का पात्र न बनाइये। व्यस्क लोग जल्दी बुरा मान जाते हैं।
- उन्हें बतायें कि अगर उन्हें किसी क्षेत्र के बारे में कोई जानकारी नहीं है तो शर्मिन्दा होने की कोई जरूरत नहीं है। क्योंकि वे यहां सीखने ही तो आए हैं।
- कक्षा में उत्साहित करने के लिए आप अपने अनुभवों को उनके साथ बांट सकते हैं। कहें,'' मैं पिछले सप्ताह इस विषय के बारे में खोज बीन कर रहा था और मुझे इसमें से बहुत कुद सीखने को मिला"। होने दें कि आपके प्रतिभागी जाने कि आप आज भी सीखने में रूचि रखते हो।
- ऐसे माहौल बनाएं ताकि सारे प्रतिभागी प्रष्न कर सकें, अपनी बातें साझा कर सकें, तथा बिना अपने सम्मान या आदर खोने के डर के अपने जीवन के बारे में बता सकें।

➢ **उन्हें आदर पाने की जरूरत होती है:** बच्चों की कक्षा में, षिक्षक उम्र में सबसे बढ़ा व्यक्ति होता है इसलिए बच्चे स्वाभाविक तौर पर अपने षिक्षक की बातों को गम्भीरता से सुनते हैं। लेकिन व्यस्कों की कक्षा में सम्भवतः षिक्षक सबसे ज्यादा उम्रदराज़ या समूह में सबसे अधिक षिक्षित व्यक्ति न हो। हो सकता है कि अगुवे को केवल अगुवाई करने के लिए नियुक्त किया गया हो, या उसे केवल सामग्री तैयार करने की जिम्मेदारी दी गयी हो, या उससे किसी विषेष विषय की खोज करने के लिए कहा गया हो। इसलिए प्रोढ़ प्रतिभागी का षिक्षक के समान ही आदर किया जाना चाहिए। एक अध्यापक कोः:

- कक्षा में पारस्परिक आदर देने प्रदान करने के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए।
- प्रतिभागियों को अपने अनुभवों से बताने, चर्चा करने और सकारात्मक सहयोग देने के लिए कहना चाहिए।
- प्रत्येक प्रतिभागी को उनकी ताकत,अनुभव तथा वरदानों के क्षेत्र में प्रोत्साहित करें।
- अपना समय व्यर्थ न गवाएं। आप तैयारी के साथ आयें और दिये गये समय में तक ही सीमित रहें।
- ऐसा दिखाने का प्रयास न करें कि आप अपने विद्यार्थियों से नैतिक, आत्मिक या ज्ञान के क्षेत्र में उनसे ज्यादा जानते हैं।
- आपको केवल कुछ समय के लिए एक अगुवाई का पद सौंपा गया है।

➢ **वे आत्म–प्रेरित व आत्म–निर्देषित होते हैं:** बच्चों बहुत सी चीजों को सीखने के लिए जिज्ञासु होते हैं लेकिन उन सभी में अपने आप सीखने की प्रेरणा नहीं होती। लेकिन बढ़े होने पर हम लोग आत्म–निर्देषित व प्रेरित हो जाते हैं। आपके समूह में आये व्यस्क सम्भवतः बाइबल को अधिक गहराई से समझने, और मसीही विष्वास में बढ़ने के लिए आये हों। ऐसा जरूरी नहीं है कि कोई उन्हें सदैव की प्रतिभागिता निभाने के लिए प्रोत्साहित करेगा। याद रखने के लिए कुछ जरूरी बातेंः

- कई बातों को विद्यार्थी अपने आप सीख सकते हैं।
- यदि हम उन से पूछते हैं कि वे समूह से क्या अपेक्षा करते हैं या वे क्या सीखने की अपेक्षा करते हैं, इस तरह से हम हर बिन्दू को उनके जीवन व जरूरतों के साथ जोड़कर उन्हें प्रोत्साहित कर सकते हैं।
- यदि प्रतिभागी को ऐसा लगता है कि आप उनका समय बेकार कर रहे हैं, तो वे आना बन्द कर देंगे। उनका सम्मान करते हुए पहले से तैयारी कर लें।

➢ **उनके लिए देखना जरूरी है कि यह ज्ञान उनके जीवन से जुड़ा है:** बच्चे अलग अलग बातों को सीखने के आदी बन जाते है, और ज्यादातर लोग इस उम्र में ऐसा ही करते हैं। वे कभी यह नहीं पूछते कि इन सारी चीजों को सीखने से हमें क्या फायदा होगा। बच्चे जानते हैं कि उन्हे सबकुछ पता नहीं है! लेकिन व्यस्क लोग केवल उन क्षेत्रों में षिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं जहां उन्हें कोई दिक्कत महसूस होती है। उनके लिए यह जानना जरूरी है कि आज हमारी विषय वस्तु उनके जीवन से किस प्रकार ताल्लुक रखती है।

- सभा का प्रारम्भ सभा के उददेष्य, चर्चा करने वाले विषय को बताने के द्वारा करें।
- वर्णन करें कि आज सिखाई जाने वाली षिक्षा किस प्रकार उनके जीवन को परिवर्तित करने जा रही है।
- बाइबल के चरित्रों के जीवन से मिलने वाली षिक्षाओं के बारे में चर्चा करें।
- सामूहिक चर्चा को प्रोत्साहन दें।
- किसी भी विषय का अध्ययन करने के बाद अपने वास्तविक जीवन में उन आत्मिक सच्चाईयों को अभ्यास करने का प्रयास करें।
- विष्वास अर्जित करने वाली घटनाओं से उनकी जुड़ने में सहायता करें।

लक्ष्य

सारे प्रतिभागियों को 5 लोगों के समूह में बांट दें। नकारात्मक बातों को प्रदर्षित करना हमेषा आसान रहता है, इसलिए आप समूह के लोगों से एक लधु नाटिका प्रदर्षित करने के लिए कहें जिसमें समूह का अगुवा ऊपर बताए गये किसी भी सुझाव को न माने। होने दें कि वे दूसरे समूह के लिए इसका प्रदर्षन करें। जैसे ही यह अगुवा किसी नियम को तोड़ता दिखाई दे तो दूसरे समूह के लोग अपने हाथ को तुरन्त उठा लें।

अतिरिक्त या वैकल्पिकः अगर आपको ऐसा महसूस होता है कि उन्हे बताये गये नियम व उनके परिणाम समझ में नहीं आये है तो आप उनके साथ बहुत संक्षिप्त चर्चा कर सकते हैं।

सिखाएं:

- **व्यस्क किस तरह अच्छे से सीख पाते हैंः हर** एक व्यक्ति अनोखा और अलग होता है, और एक छोटे समूह के अगुवे से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह सभी लोगों को प्राथमिकता प्रदान कर सके, अतः कुछ ऐसी ध्यान देने योग्य बातें हैं जिन्हें हम वयस्कों को षिक्षा देने हेतू आदर्ष माहौल बनाने के सम्बन्ध में सम्बोधित कर सकते हैं।

  - **व्यस्क कारण जानने पर सीखते हैंः** एक व्यस्क होने के नाते हमारा समय बहुत कीमती होता है। जब भी कभी हम किसी लघु सभा में होते हैं, तो हमें वहां होने की एक वजह बतायी जाती है। कोई ऐसा कारण जिसके लिए हम अपना समय निकालते या फिर अपने बच्चों की देखभाल करने का इन्तेज़ाम करते हैं। व्यस्कों को यह पता होना जरूरी है कि वे असल में वहां क्यों हैं, और उन्हें उनके वहां रूकने का परिणाम भी नजर आना चाहिए। वे पूछ सकते हैं कि ''यह मेरे लिए कैसे महत्वपूर्ण है? या '' इससे किस प्रकार मेरे जीवन में सुधार आएगा?'' यदि व्यस्कों को वजह पता चल जाये तो वे उस चीज़ के बारे में जानने के लिए अति उत्सुक हो जाते हैं।
  - **व्यस्क तब सीखते हैं जब वे उसे अपने तरीके से सीख सकें:** व्यस्कों को सीखने के बहुत से तरीकों के बारे में बताएं। उन्हें अपने आप सुनने, देखने, और अभ्यास करने का विकल्प दिया जा सकता है। वे समझ सकते हैं कि कौन सा तरीका उनके लिए सहज रहेगा, और उन्हे ऐसा करने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए।
  - **व्यस्क दूसरों के अनुभवों से सीखना पसन्द करते हैंः** व्यस्कों को आजकल लिखित षिक्षाओं की आदत पड़ गयी है, और ज्यादातर लोग पुस्तकों से जानकारियों को संचित करना पसन्द करते हैं। उन्होंने जो कुछ अभी तक सीखा है उसे अनुभव करने की अनुमति दें या चर्चा तथा नाटकों के द्वारा समस्याओं का समाधान करने का परिक्षण करने दें। आत्मिक सच्चाईयों को सिखाते समय कहानियों तथा वास्तविक गवाहियों का इस्तेमाल करने से लोगों को अपने आप सत्यों का अनुभव करने में सहायता मिलेगी।
  - **व्यस्क प्रोत्साहित करने वाले माहौल में सीखते हैंः** व्यस्क मजाक बनाने वाले, अनुषासित या डराने वाले माहौल में नहीं सीख पाते। यदि व्यस्कों को उनके ज्ञान के अभाव के कारण निन्दित किया जाता है, तो वे या तो उस समूह में वापस नहीं आयेगें या वे कभी भी ईमानदारी के साथ कोई जवाब नहीं देगें। जब आपका माहौल सकारात्मक, प्रोत्साहित करने वाला, स्वीकार करने वाला, और प्रेम करने वाला होता है तो प्रतिभागी सीखने तथा एक दूसरे की सीखने में सहायता करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।
  - **व्यस्क अभ्यास करने का चुनाव होने पर सीखते हैंः** सीखने का एक महत्वपूर्ण भाग विकल्प या चुनाव करना है। विद्यार्थी सीखी गयी बातों का चुनाव करने पर बेहतर ढंग से सीख पाते हैं। आप अपने समूह के लोगों को एक विषय, पुस्तक या इस श्रृंखला की अगली षिक्षा दें। हो सकता है कि आपके विद्यार्थी के पास आपसे भी बेहतर विचार हो। ऐसा करने से कक्षा प्रेरक स्तर हमेषा उच्च रहेगा।
  - **व्यस्कों को षिक्षा देने में षिक्षक की भूमिकाः** व्यस्कों को षिक्षा देने के मामले में षिक्षकों की भूमिका बच्चों को षिक्षा देने से बिल्कुल भिन्न है। यहां पर सिद्ध नहीं परन्तु विषेष विषय की खोज करने वाला और तैयारी करने वाला होना ज़रूरी है। अध्यापक को विद्यार्थियों के सम्बन्ध में कोई अनुमान नहीं लगाना चाहिए, क्योंकि हो सकता है कि किसी प्रतिभागी ने विषय वस्तु को पहले पढ़ा हो और किसी को इस विषय में बिल्कुल भी जानकारी न हो। इस स्थिति में नम्र बने रहना तथा यह जानना बुद्धिमानी है कि आपकी भूमिका विद्यार्थियों के लिए हर सम्भव व उत्तम तरीकों से परमेष्वर के सत्य की खोज करने में सहायता करने की है।

चर्चा

- यदि आप किसी छोटे समूह को षिक्षा दे रहे हैं, तो आप किस तरह से सामुहिक रूप बिताए जाने वाले समय में ज़्यादा से ज़्यादा जानकारियों या षिक्षाओं को कैसे समावेषित कर सकते हैं?

- व्यस्कों के षिक्षक को नम्र होना क्यों ज़रूरी है?

- आपके समूह के सारे लोग बुद्धि, षैक्षिक व आत्मिक क्षेत्र में समान स्तर पर नहीं होगें। आप इस वास्तविकता हो अपने फायदे के लिए किस प्रकार इस्तेमाल करेंगे? एक ही स्तर के लोगों वाले समूह से ज्यादा मिश्रित स्तर के लोग होने में क्या फायदा है? इसमें कौन कौन सी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
- अपने समूह में सदस्यों के बीच व षिक्षक तथा विद्यार्थियों के बीच, आदर करने हेतु प्रोत्साहित करने के कौन कौन से व्यवहारिक तरीके हैं?

प्रार्थना

प्रार्थना के साथ समाप्त करें। प्रार्थना करें कि प्रत्येक प्रतिभागी अपने संगी प्रतिभागी का आदर करे। उन्हें नम्र ह्रदय,धीरज और प्रेम के साथ सिखाएं। प्रार्थना करें कि प्रतिभागी आने वाले समय में ऐसे अध्यापक बनें जो अपने जीवन के हर एक क्षेत्र में यीषु को अपना आदर्ष जानें। प्रार्थना करें कि जब वे सत्य की षिक्षा दें तो बहुत से लोगों की मसीही जीवन में बढ़ौत्तरी हो और वे दूसरों को भी प्रोत्साहित करने वाले हो सकें।